

चोलक पुं. (तत्.) दे. चोल।

चोलकी पुं. (तत्.) 1. बाँस का कल्ला 2. नारंगी का पेड़ 3. हाथ की कलाई 4. करील का पेड़।

चोला पुं. (तद्.) 1. एक प्रकार का बहुत लंबा और ढीला कुरता जो प्रायः साधु, फकीर और मुल्ला पहनते हैं 2. शिशु को पहली बार पहनाया जाने वाला कपड़ा 3. शरीर, बदन, जिस्म, तन प्रयो. इस दवाई के खाने से कुछ ही समय में चोला कंचन-सा हो जाएगा मुहा. चोला छोड़ना- मरना, प्राण त्यागना।

चोली स्त्री. (तत्.) 1. स्त्रियों का एक पहनावा जो अंगिया से मिलता-जुलता होता है, इसमें पीछे की ओर बंद नहीं होता है 2. डलिया जिसमें पान आदि रखते हैं मुहा. चोली दामन का साथ- बहुत अधिक घनिष्ठता।

चोली मार्ग पुं. (तत्.) वाम मार्ग का एक भेद।

चोष पुं. (तत्.) 'भावप्रकाश' के मत से एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी को बगल में जलन मालूम होती है।

चोषक वि. (तत्.) चूषने वाला, चूसने वाला।

चोषण पुं. (तत्.) चूसने की क्रिया, चूसना।

चोषना स.क्रि. (तत्.) चूसना।

चोसा पुं. (देश.) लकड़ी रेतने की रेती जो एक हाथ लंबी और दो अंगुल चौड़ी होती है।

चोस्क पुं. (तत्.) 1. उत्तम जाति का घोड़ा 2. सिंधुवार नामक पेड़।

चौंक स्त्री. (देश.) चौंकने का भाव, झिझक, भड़क।

चौंकना अ.क्रि. (देश.) 1. भय, विस्मय या पीड़ा की अचानक अनुभूति से चंचल हो जाना, काँप उठना प्रयो. बम की आवाज से वह चौंक उठा 2. चौंकन्ना होना, सतर्क होना प्रयो. वह उसके पिछले व्यवहार से चौंक उठता है 3. चकित होना, हैरान होना, विस्मित होना प्रयो. वह अपने विदेशी मित्र के अचानक घर पर आगमन से चौंक उठा 4. किसी कार्य में प्रवृत्त होने से डरना, हिचकना।

चौंटली पुं. (देश.) सफेद घुंघची, श्वेत चिरमिटी।

चौंडा पुं. (तद्.) छोटा कच्चा कुआँ जो खेत के पास सिंचाई के लिए खोद लिया जाता है।

चौंतरा पुं. (देश.) दे. चबूतरा।

चौंध स्त्री. (देश.) चकाचौंध, तिलमिलाहट।

चौंधना अ.क्रि. (देश.) 1. किसी वस्तु का क्षणिक प्रकाशित होना, चमकना 2. तेज प्रकाश आँखों पर पड़ने से अंधकार के अतिरिक्त कुछ न दिखाई देना।

चौंधियाना अ.क्रि. (देश.) चकाचौंध होना, दृष्टिमंद होना।

चौंधी स्त्री. (देश.) 1. चकाचौंध, तिलमिलाहट 2. आँखों का एक रोग। इसके रोगी को रात में केवल रोशनी दिखाई देती है और कुछ नहीं।

चौंबक वि. (तद्.) जिसमें चुंबक शक्ति हो, आकर्षण करने वाला।

चौर पुं. (तद्.) 1. सुरा या चौरी मृग, चँवर 2. गाय की पूँछ के बालों का गुच्छ जो राजा-महाराजाओं या देव मूर्तियों के सिरो पर हिलाया जाता है जिससे मक्खियाँ आदि न बैठने पाएँ।

चौरा पुं. (तद्.) 1. अनाज रखने का गड़ढा 2. सफेद पूँछ वाला बैल।

चौरी स्त्री. (देश.) 1. घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छ जो मक्खियाँ उड़ाने के काम आता है 2. चोटी या वेणी बाँधने की डोरी 3. सफेद पूँछ वाली गाय।

चौंसठ वि. (तद्.) जो गिनती में साठ और चार हो।

चौंसठवाँ वि. (तद्.) जो क्रम में तिरसठवें के बाद हो।

चौ वि. (तद्.) चार (संख्या)। पुं. (तत्.) मोती तौलने का एक मान, जौहरियों का एक तौल।

चौआ पुं. (देश.) चौपाया।

चौआना अ.क्रि. (देश.) 1. चकपकाना, चकित होना, विस्मित होना 2. चौकन्ना होना, घबरा जाना 3. सतर्क होना।

चौक पुं. (तद्.) 1. चौकोर भूमि, चौखूँटा, सहन, आँगन 2. मंगल अवसरों पर आँगन में आटे,